दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-IV (प्रश्नपत्र-2)

DTVF/18(JS)–HL-HL4

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): Pradeep Kumar Dwivedi

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 04 17/07/2018

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

0	8	6	0	5	2	0

विद्यार्थी के हस्ताक्षर
(Student's Signature):

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS**.*

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained):

टिप्पणी (Remarks):

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

A3

मूल्यांकन की पद्धति

प्रिय अभ्यर्थियों,

आपकी उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक-समूह के सदस्य निम्नलिखित निर्देशों का ध्यान रखते हैं। आप भी इन्हें ध्यान से पढ़ें ताकि आप अपने प्राप्तांकों का तार्किक कारण समझ सकें।

परीक्षकों के लिये निर्देश

1. मूल्यांकन में अंकों का वही स्तर रखा जाना चाहिये जैसा संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) के परीक्षकों द्वारा रखा जाता है।
2. सामान्य अध्ययन का जो उत्तर हर दृष्टिकोण से सटीक व उत्कृष्ट है; उसे अधिकतम 60% अंक दिये जाने चाहियें क्योंकि आयोग द्वारा किये जाने वाले मूल्यांकन में भी इससे अधिक अंक मिलना लगभग असंभव है। वैकल्पिक विषयों के उत्कृष्ट उत्तरों तथा श्रेष्ठतम निबंधों में अधिकतम 70% तक अंक दिये जा सकते हैं।
3. कृपया अंकों का वितरण निम्नलिखित तालिका के अनुसार करें-

Method of Evaluation

Dear Candidates,

While assessing your answer-scripts, the evaluators are required to follow the given instructions. You should also read them carefully to understand the logic behind the marks obtained by you in the tests.

Instructions for the Evaluators

1. The level of marks while evaluating the answers should be kept as per UPSC (Union Public Service Commission) standards as far as possible.
2. The answers of General Studies which are accurate and excellent from every perspective should be awarded a maximum of 60% marks as it is almost impossible to get more than that in actual UPSC examination. Excellent answers in optional subjects and the best written essays can be awarded a maximum of 70% marks.
3. Please assign the marks according to the following table-

उत्तर का स्तर (Standards of Answer)	सामान्य अध्ययन में अंक-स्तर (Marks Standard G.S.)	वैकल्पिक विषय तथा निबंध में अंक-स्तर (Marks Standard - Optional Subject and Essay)
उत्कृष्ट (Excellent)	51-60%	61-70%
बहुत अच्छा (Very Good)	41-50%	51-60%
अच्छा (Good)	31-40%	41-50%
औसत (Average)	21-30%	31-40%
कमज़ोर (Poor)	0-20%	0-30%

4. कृपया उत्तर में निम्नलिखित गुणों को विशेष प्रोत्साहन दें-
   - प्रश्न की सटीक समझ व उत्तर की व्यवस्थित रूपरेखा
   - संक्षिप्त, टू-द-पॉइंट लेखन शैली
   - प्रामाणिक तथ्यों का समुचित उपयोग
   - अधिकतम जरूरी बिंदुओं का समावेश
   - सरकारी दस्तावेज़ों (मंत्रालयों/आयोगों की रिपोर्ट्स, पॉलिसी पेपर्स आदि) के संदर्भों की चर्चा
   - प्रभावी भूमिका व निष्कर्ष
   - समकालीन घटनाओं/प्रसंगों को उत्तर से जोड़ना
   - दृष्टिकोण में संतुलन, समावेशन व गहराई
   - अच्छी, साफ-सुथरी हैंडराइटिंग
   - भाषा में प्रवाह
   - आवश्यकतानुसार डायग्राम्स, नक्शों आदि का प्रयोग
   - तकनीकी शब्दावली का सटीक उपयोग
   - सुंदर प्रस्तुति शैली (छोटे पैराग्राफ्स रखना, महत्त्वपूर्ण शब्दों को अंडरलाइन करना आदि)
   - विराम चिह्नों का समुचित प्रयोग
   - भाषा में वर्तनी व व्याकरण की शुद्धता
5. टॉपर्स के अनुभव बताते हैं कि उत्तर की विषयवस्तु अच्छी होने पर आयोग के परीक्षक शब्द-सीमा के थोड़े बहुत उल्लंघन पर अंक नहीं काटते हैं। कृपया आप भी इसी दृष्टिकोण के अनुसार अंक-निर्धारण करें।

4. Please devote special attention to the following qualities in an answer–
   - Accurate understanding of the question and systematic presentation of the answer
   - Crisp and to the point writing style
   - Adequate use of authentic facts
   - Inclusion of all the important points
   - Citing of relevant facts and figures from relevant official documents (Ministries /Commissions Reports, Policy Papers etc.)
   - Effective introduction and conclusion
   - Linking of current events and situations with the answer
   - Balance and depth in answer-writing
   - Legible and clean handwriting
   - Flow of language
   - Use of diagrams, maps etc
   - Precise use of technical terminology
   - Beautiful presentation style (small paragraphs, underlining important words etc.)
   - Proper use of punctuations
   - Correct spellings and right use of grammar
5. Experience of UPSC toppers also indicates that if the content of the answer is good, the UPSC examiners do not cut the marks on slight violations of the word-limit. Please award marks strictly according to the above-mentioned instructions.

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित काव्यांशों की लगभग 150 शब्दों में ससंदर्भ व्याख्या कीजिये: 10 × 5 = 50

(क) चकवी बिछुटी रैणि की, आइ मिली परभाति।
जे जन बिछुटे राम सूं, ते दिन मिले न राति।।

'कबीर' के काव्य पर सूफी प्रभाव का एकपक्ष ब्रह्म या ईश्वर से न मिल पाने की तड़प भी है जो 'कबीर ग्रंथावली' के 'बिरह कौ अंग' में 'श्री श्यामसुन्दर दास' द्वारा संकलित की गई है।

कबीर ईश्वर विरह में तड़प रहे हृदय व भक्त की वेदना का मार्मिक चित्रण करते हुए कह रहे है कि रात में बिछुड़े चकई और चकवा तो खुशकिस्मत हैं कि सुबह होते ही उनका मिलन हो जाता है परन्तु जो मनुष्य ईश्वर से बिछुड़ा रहता है अर्थात जिसका मिलन ईश्वर से नहीं हो पाता उसे तो दिन-रात विरह का दुख काटना पड़ता है।

सौन्दर्य : अलंकार – उपमा
भाषा : सधुक्कड़ी, 'राति व परभाति' जैसे शब्दों में अवधी का प्रभाव

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रस - वियोग श्रृंगार

विशेष :(i) चकवा-चकई की काव्यरूढ़ि भारतीय काव्य-साहित्य में अत्यधिक प्रचलित है जिसका प्रयोग सूरदास व जायसी ने भी विरह वियोग दिखाने के लिए किया है

(ii) कबीर ने 'राम' का नाम रामानुजाचार्य से लिया परन्तु उसमें परिवर्तन कर उन्हें निर्गुण बना दिया।

(iii)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) दूर करहु बीना कर धरिबो।
मोहे मृग नाहीं रथ हाँक्यो, नाहिंन होत चंद को ढरिबो।।
बीती जाहि पै सोई जानै कठिन है प्रेमपास को परिबो।
जब तें बिछुरे कमलनयन, सखि, रहत न नयन नीर को गरिबो।।
सीतल चंद अगिनि सम लागत कहिए धीर कौन बिधि धरिबो।
सूरदास प्रभु तुम्हारे दरस बिनु सब झूठो जतननि को करिबो।।

राधा की बिरह विवेचना सूर की विरह वाणी का तीव्रतम अंश है। ऐसा ही एक वर्णन 'भ्रमरगीत सार' (संकलनकर्ता: आचार्य रामचन्द्र शुक्ल) से उद्धृत है।

यहाँ सखी राधा को वीणा-वादन बन्द करने की सलाह दे रही है क्योंकि वीणा का स्वर सुनकर चन्द्रमा के रथ के घोड़े रुक गए हैं जिस कारण चन्द्रमा आगे नहीं बढ़ पा रहा है और रात्रि नहीं ढल पा रही है।

तब राधा उत्तर देती हैं कि हे सखी प्रेम की गति में जो संलिप्त होता है वही इसका प्रभाव जानता है। जब से श्रीकृष्ण मुझसे बिछड़े हैं तब से अश्रुधारा रुकने का नाम नहीं ले रही है। यह शीतल चंद्रमा भी अग्नि के समान लगने लगा है। तुम्हीं बताओ मैं किस प्रकार धैर्य रखूँ।

राधा कृष्ण का आह्वान करते हुए कह

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

रही है कि हे कृष्ण तुम जबतक आकर मुझसे मिल नहीं लेते तब-तक सब यत्न व्यर्थ हैं। मेरे हृदय को आराम मिलना असंभव है।

विशेष : (i) भाषा : बृज , ~~[illegible]~~
(ii) अलंकार - अतिशयोक्ति , रूपक
(iii) रस - वियोग श्रृंगार

(iv) सूरदास के यहाँ विभाव योजना की सीमाओं के कारण कहीं-कहीं उपमा अलंकार में परिमिति का ध्यान नहीं रखा गया है। आचार्य शुक्ल ने ~~ऐसे~~ उदाहरणों को ध्यान में रखकर कहा है कि - " सूर को अलंकारो की झक सी चढ़ जाती है"

(v) प्रकृति भी उसी अनुसार प्रतीत होती है जैसा व्यक्ति का भाव होता है। सूर और जायसी दोनों ने इस युक्ति का सुन्दर प्रयोग किया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) है अमानिशा, उगलता गगन घन अंधकार
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन चार,
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल
भू-धर ज्यों ध्यान-मग्न, केवल जलती मशाल।

प्रस्तुत काव्यांश महाप्राण कवि 'सूर्यकान्त त्रिपाठी' 'निराला' कृत कविता 'राम की शक्तिपूजा' से उद्घृत है।

कवि यहाँ प्रकृति के माध्यम ~~सा~~ युद्धोपरान्त सानु-सभा में व्याप्त निराशा के वातावरण को रेखांकित कर रहा है।

कवि बताता है कि हार की निराशा इस कदर हावी है कि प्रकृति भी भयावह प्रतीत हो रही है। चारों तरफ घुप्प अंधेरा छाया हुआ है। दिशा का ज्ञान खो गया है अर्थात् विजय का कोई मार्ग सूझ नहीं रहा है। ऊपर से पीछे समुद्र का स्वर भी भयावह गर्जन वाला है। कहीं कोई प्रकाश व आशा की किरण दिखाई दे रही है तो केवल एक मशाल के रूप में

विशेष : 1. तत्समबहुला खड़ी बोली का प्रयोग लेकिन कथ्यानुरूप 'मशाल' जैसे फारसी शब्दों का भी प्रयोग किया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. प्रकृति वातावरण व भावनाओं को सघन कर रही है। इस प्रकार प्रकृति का
3. प्रयोग उद्दीपन विभाव के रूप में किया गया है।

3. 'भूधर ज्यों ध्यानमग्न' में उत्प्रेक्षा की सुंदरता दर्शनीय है।

4. निराला की गिनती आशावादी कवियों में होती है। 'केवल जलती मशाल' भी आशा का प्रतीक है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) श्रेय नहीं कुछ मेरा,
मैं तो डूब गया था स्वयं शून्य में–
वीणा के माध्यम से अपने को मैंने,
सब-कुछ को सौंप दिया था–
सुना आप ने जो वह मेरा नहीं,
न वीणा का था:
वह तो सब-कुछ की तथता थी
महाशून्य
वह महामौन
अविभाज्य, अनाप्त, अद्रवित, अप्रमेय
जो शब्दहीन
सब में गाता है।

व्याख्येय पद्यावतरण 'अज्ञेय' कृत 'असाध्यवीणा' से उद्धृत है। यहाँ प्रियंवद द्वारा वीणा साधने की प्रक्रिया में स्वयं को महाशक्ति को समर्पित कर अहं-शून्य हो जाने का भाव उजागर हुआ है।

प्रियंवद कहता है कि वीणा के साधन में मेरा स्वयं का कोई श्रेय नहीं। मैंने तो स्वयं को अहंशून्य कर उस परमशक्ति को सौंप दिया था जो सर्वज्ञाता ~~सर्व~~ है। वह परमशक्ति जो सर्वगुणसम्पन्न है। जिसमें विरोधी प्रतीत होने वाले सभी गुण एक साथ समाहित है।

यह वही महाशक्ति है जो हम सब में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

व्याप्त है और जिसका हम एक अंश मात्र हैं।

विशेष

1. तत्सम एवं तद्भव शब्दावली का सुंदर मिश्रण जो काव्य -कथ्य को सघन बनाता है।, प्रस्तुत हुआ है।

यथा : माध्यम - तद्भव
अविभाज्य - तत्सम

2. 'शब्दहीन, सबमें गाता है' में विरोधाभास अलंकार का प्रयोग हुआ है

3. पंक्तियाँ अज्ञेय की नास्तिकता से आस्तिकता की यात्रा की पूर्णता का संदेश देती हैं।

4. 'कीर्केगार्द' के अस्तित्ववादी दर्शन की छाप दिख रही है जिसमें कहा गया है कि व्यक्ति को शांति परम-शक्ति की गोद में ही मिलती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) भर भादौं दूभर अति भारी। कैसें भरौं रैनि अँधियारी।
मँदिल सून पिय अनतै बसा। सेज नाग भै धै धै डसा।
रहौं अकेलि गहें एक पाटी। नैन पसारि मरौं हिय फाटी।
चमकि बीज घन गरजि तरासा। बिरह काल होइ जीउ गरासा।
बरिसै मघा झँकोरि झँकोरी। मोर दुइ नैन चुवहिं जसि ओरी।
पुरवा लाग पुहुमि जल पूरी। आक जवास भई हौं झूरी।

आचार्य शुक्ल प्रभृति आलोचकों ने 'नागमती वियोग-वर्णन' को हिन्दी साहित्य की अमूल्य वस्तु कहा है।

जायसी कृत 'पद्मावत' का यह प्रसंग बारहमासा काव्यरूढ़ि के प्रयोग के कारण प्रकृति और मानव-भावनाओं का अद्भुत समुच्चय करने में सक्षम हुआ है।

नागमती कहती है कि प्रिय के वियोग में सभी ऋतुओं, प्रकृति के सभी उपादान उसे विचलित कर रहे हैं। चाहे वह भादों की रात हो या कुछ और।

शैय्या नाग की भाँति उसे डस रही है। बिजली ऐसे लग रही है मानो बस अभी थोड़ी देर में उसे खा जायेगी। वर्षा ऋतु में उसके नयन ओरी की भाँति बह रहे हैं। कुलमिलाकर प्रिय-वियोग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में वह सूखकर दुबली हो गई है।

विशेष

1. ठेठ अवधी भाषा के सुन्दर प्रयोग के कारण ही जायसी को 'अवधी का अग्रणी' कहा जाता है। 'ओरी' शब्द लोकभाषा का सुंदर उदाहरण है।

2. बारहमासा काव्य-रूढ़ि का प्रयोग

3. उपमा व रूपक वियोग श्रृंगार को सघन बना रहे हैं।

4. प्रकृति का भावात्मक रूप में ऐसा ही प्रयोग सूर की गोपियों के विरह-वर्णन में दर्शित होता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'राम की शक्ति-पूजा' के आधार पर निराला की भक्ति-चेतना पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

3. (क) 'राम की शक्ति-पूजा' में राम का आत्मसंघर्ष वस्तुतः कवि निराला का ही आत्मसंघर्ष है।' इस कथन की सार्थकता पर विचार कीजिये। 20

राम की शक्ति-पूजा एक बहुसूत्रीय अर्थ-संरचना वाली कविता है जिसमें 'सीता की मुक्ति के माध्यम से नारी मुक्ति, स्वाधीनता संग्राम की अभिव्यक्ति, शक्ति की मौलिक कल्पना जैसे भाव एक साथ व्यक्त हुए हैं। निराला का आत्मसंघर्ष भी इसी कड़ी का एक अंग है जिसे दूधनाथ सिंह सम आलोचकों ने आलोकित किया है।

छायावाद से प्रभावित व प्रणेता निराला के काव्य में वैयक्तिकता का तत्व प्रधानता से विद्यमान रहा है। पुनः निराला का जीवन भी संघर्ष की गाथा ही रहा है। पहले मनोहरा देवी की मृत्यु और फिर आर्थिक अभावों के कारण सरोज की मृत्यु निराला को उसी आत्म-धिक्कार की अवस्था में पहुँचाती है जो राम के यहाँ है —

"धिक् जीवन को जो पाया ही आया विरोध,
धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

और अपनी पत्नी व पुत्री को बचा न पाने का मलाल भी निराला को वैसा ही था जैसा कि राम को है– "जानकी हाय उद्धार प्रिया का हो न सका"।

आलोचकों ने निराला के जीवन के अन्य पहलुओं को भी उजागर किया है। वे भी शक्ति के अनैतिक पक्ष में होने को लेकर उतने ही विचलित थे जितने राम, चाहे वह साहित्यिक रूढ़िवादिता हो या आर्थिक अभाव। वे महाप्राण कवि थे और संघर्ष-रत रहकर ही जीवन युद्ध लड़ते रहे फिर भी हार की स्थिति में बार-बार पहुँच जाना उनके औदात्य को वैसे ही विचलित करता है जैसे राम को।

पुनः योग में उनका विश्वास तथा राम का योग के माध्यम से शक्ति-साधन करना – " क्रम क्रम से पार हुए राघव के पंच दिवस, "

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रघुनाथ सिंह ने निराला द्वारा राम के शरीर-सौष्ठव के वर्णन को भी निराला की शारीरिक संरचना से संगत बताया है। चाहे वह 'विपर्यस्त जटा मुकुट' हो या फिर बाहुओं की संरचना।

समग्रत: छायावाद के व्यक्तिवादी प्रभाव के कारण राम की शक्ति-पूजा में निराला का आत्मसंघर्ष भी एक आयाम है जो कविता को नई संभावनाएँ प्रदान करता है।

x

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) काव्य-शिल्प के धरातल पर भारत-भारती का विवेचन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'भारत-भारती' मैथिलीशरण गुप्त द्वारा 1909 में रचित कविता है जिसका प्रमुख उद्देश्य हीनग्रंथि से ग्रसित भारतीय जन-मानस का उद्बोधन करना था और कविता का शिल्प भी इस उद्देश्य को पूर्ण करने का एक औजार ही है।

भारत-भारती में भाषा के क्षेत्र में तत्सम शब्दावली को अपनाते हुए भी बोधगम्यता को प्राथमिकता दी गई है और इसका प्रमुख कारण है- अभिधा शब्द-शक्ति का प्रयोग यथा। -

" केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए,
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए"

भाषा जब अभिधात्मक शब्द-शक्ति का प्रणयन करती है तब उसमें अलंकार, बिम्ब, प्रतीक आदि चमत्कृत करने वाले तत्वों की अधिक अपेक्षा नहीं की जाती परन्तु तब भी गुप्त जी ने सहज रूप से उपमा, रूपक आदि अलंकारों का प्रयोग तथा सहज बिंबों का निर्माण कविता का प्रभाव बढ़ाने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के लिए किया है।

गुप्त जी का काव्य लय व तुकबन्दी के लिए भी जाना जाता है। कई स्थानों पर स्वयं ही गुप्त जी ने अपनी कविताओं को तुकबंदी कहा है और इसी अनुरूप भारत-भारती में हरिगीतिका छंद का प्रयोग करते हुए गुप्त जी ने लय व तुकबन्दी लगातार बनाए रखी है।

यूँ तो भारत-भारती मुख्यत: मुक्तक परंपरा का ही निर्वाह करती है परन्तु भूतकाल, वर्तमान व भविष्य में व्यवस्थित होने के कारण ० औण प्रबंध रूप भी आ गया है जिसके कारण इसे औण-प्रबंध धर्मी मुक्तक भी कह दिया जाता है।

~~स्वाभाविक~~ अपनी सहजता व बोधगम्यता के कारण ही भारत-भारती इतनी प्रचलित हुई कि दक्षिण-भारतीय लोगों ने भी इसे पढ़ने के लिए हिन्दी सीखने का प्रयास किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'राम की शक्ति-पूजा' की भाषा पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राम की शक्ति पूजा निराला की सर्जनाशक्ति के उत्कृष्टतम उदाहरणों में से एक है जिसकी भाषा ने नये आयाम छूकर खड़ी बोली को कविता के क्षेत्र में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

राम की शक्ति पूजा मुख्यत: तत्सम शब्दावली पर अवलंबित है और सामासिकता की उत्कृष्टता को धारण करती है। यथा -

"अनिमेष राम विश्वजिद्दिव्य शर भंग भाव
विद्धांग बद्ध कोदण्ड मुष्टि खर रुधिर स्राव"

पुन: छायावादी कवियों की रचनादृष्टि में बिम्बों व प्रतीकों का प्रमुख स्थान रहा है। राम की शक्ति-पूजा में भी निराला ने कोमल व विराट सभी बिंब खींचे हैं। उदाहरणार्थ

कोमल बिंब: "खिंच गए दृगों में सीता के
राममय नयन"

विराट बिम्ब: "अप्रतिहत गरज रहा पीछे
अम्बुधि विशाल"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रतीकात्मकता की दृष्टि से सम्पूर्ण कविता ही 'राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम की अभिव्यक्ति' व 'निराला के आत्मसंघर्ष' की अभिव्यक्ति का प्रतीक है।

निराला अपने जीवन व साहित्य में विद्रोही कवि माने जाते रहे हैं इस कारण वे कथ्य में नारी की मुक्ति करते हैं और शिल्प में 'छंद मुक्ति' और लय का ढाँचा बनाये रखा। भी अर्थ में मुक्त छंद का प्रयोग करते हैं।

अलंकारों का सहज प्रयोग उनकी भाषा शक्ति का उत्कृष्ट उदाहरण है। उपमा, रूपक समस्त अलंकार उनके काव्य की शोभा बढ़ाते हैं यथा।—
" भूधर ज्यों ध्यानमग्न, केवल जलती मशाल"

इस प्रकार निराला ने भाषा के क्षेत्र में वह स्तर छुआ है जो अन्य कवियों के लिए प्रतिमान स्थापित करता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में ससंदर्भ व्याख्या कीजिये: 10 × 5 = 50

(क) जीना चाहते हो? कठोर पाषाण को भेदकर, पाताल की छाती चीरकर अपना भोग्य संग्रह करो; वायुमंडल को चूसकर, झंझा-तूफान को रगड़कर, अपना प्राप्य वसूल लो; आकाश को चूमकर, अवकाश की लहरों में झूमकर, उल्लास खींच लो।

व्याख्येय गद्यावतरण आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी कृत ललित निबंध 'कुटज' से उद्धृत है।

लेखक यहाँ कुटज के फूल के माध्यम से मानव समाज हेतु जीवनी-शक्ति व कर्म का महत्त्व समझा रहा है।

द्विवेदी जी कहते हैं कि जिस व्यक्ति में जीवनी-शक्ति होती है वह संसाधनों के अभाव का रोना नहीं रोता। वह कुटज की भाँति दुर्गमतम परिस्थितियों में भी अपना लक्ष्य प्राप्त कर लेता है। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी मुस्कुराने की वजह ढूंढ़ लेता है।

विशेष: 1. तत्सम शब्दावली का प्रयोग चिंतनपरक शैली के प्रभाव को सघन बना रहा है।

2. कुटज के रूपक का आरोपण मनुष्य पर किया गया है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान मे कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this sp

3. लेखक ने कथ्यानुरूप फारसी शब्दों के प्रयोग से भी परहेज नहीं किया है। यथा - तूफान

4. आलोचना में यह कहा गया है कि यह पंक्तियाँ द्विवेदी जी ने स्वयं के कठिन समय में लिखी थी और यह उनकी आत्माभिव्यक्ति ही है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) कष्ट हृदय की कसौटी है, तपस्या अग्नि है। सम्राट! यदि इतना भी न कर सके तो क्या! सब क्षणिक सुखों का अंत है। जिसमें सुखों का अंत न हो, इसलिये सुख करना ही न चाहिये। मेरे जीवन के देवता! और उस जीवन के प्राप्य! क्षमा।

'जयशंकर प्रसाद' का रचनाकर्म छायावादी प्रेमदृष्टि व त्यागशील नारी-दृष्टि से परिपूर्ण है। 'स्कन्दगुप्त' की देवसेना भी ऐसे ही त्याग का परिचय देते हुए 'स्कन्दगुप्त' के शारीरिक ~~परि~~ प्रणय निवेदन को अस्वीकार कर रही है।

देवसेना कहती है कि दैहिक सुख तो क्षणिक हैं जिनका अन्त निश्चित है अतः ऐसे सुख नहीं करना चाहिए। कष्टपूर्ण जीवन में ही व्यक्ति की इच्छाशक्ति व स्थिरता की परीक्षा होती है। अतः कष्ट को स्वीकार करिए।

अन्त में वह आत्मिक रूप से स्वयं को समर्पित कर दैहिक भोग को अस्वीकार करने के लिए क्षमाप्रार्थी है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष 1. ~~छाया~~ तत्समीकृत, दर्शनप्रधान भाषा प्रसाद की प्रमुख विशेषता है।

2. छायावादी वायवीय, (योगमूलक प्रेमदृष्टि का प्रतिपादन किया गया है।

3. 'सभी क्षणिक सुखों का अंत है' में बौद्ध-दर्शन की झलक तो है ही साथ में प्रसाद के प्रत्यभिज्ञा दर्शन का संप्रेषण भी हुआ है।

4. ~~किन्तु~~ उपरोक्त कथन नाटक को भारतीय नियताप्ति व ~~त्रासदी~~ पश्चिमी त्रासदी से भिन्न प्रसादान्त की ओर ले जाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) राजनीति साहित्य नहीं है, उसमें एक-एक क्षण का महत्त्व है। कभी एक क्षण के लिये भी चूक जाएँ तो बहुत बड़ा अनिष्ट हो सकता है। राजनीतिक जीवन की धुरी में बने रहने के लिये व्यक्ति को बहुत जागरूक रहना पड़ता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

व्याख्येय गद्यावतरण नवलेखन के पुरोधा नाटककार 'मोहन राकेश' के नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' से अवतरित है।

पंक्तियों में प्रियंगुमंजरी मल्लिका से वार्तालाप करते हुए राजनीतिक जीवन की आवश्यकताओं के बारे में अवगत करा रही है।

प्रियंगु कहती है कि राजनीति में साहित्य की तरह भावनाओं का कोई स्थान नहीं। यहाँ व्यक्ति की बुद्धि प्रमुख हो जाती है। व्यक्ति को प्रति-पल सजग रहते हुए अपने आस-पास की घटनाओं ~~स~~ का ज्ञान रखना पड़ता है और भावना से परे निर्णय लेने पड़ते हैं। एक भी गलती अनर्थ कर सकती है।

<u>विशेष</u> 1. प्रियंगु मंजरी के माध्यम से राजनीति के भावनाहीन स्वरूप की अभिव्यंजना की गई है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

2. मोहन राकेश सहज शब्दों के कारीगर हैं इसलिए ऐतिहासिक वातावरण व चिंतन प्रधान शैली के बावजूद भाषा सहज व बोधगम्य है।

3. यह पंक्तियाँ कहीं न कहीं राजनीति के उसी विद्रूप स्वरूप को व्यंजित कर रही हैं जो 50-60 के दशक में व्याप्त था।

4.

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(घ) बच्चों की शक्लें और शरारतें तो बहुत पहचानी सी लगती हैं पर गोलगप्पे खाती हुई उनकी मम्मी अजनबी है, क्योंकि उसकी आँखों में मासूमियत और गरिमा से भरा प्यार नहीं है। उसके शरीर में मातृत्व का सौंदर्य और दर्प भी नहीं है। उसमें सिर्फ एक खुमार है और एक बहुत बेमानी और पिटी हुई ललकार है; जिसे न तो नकारा जा सकता है और न स्वीकार किया जा सकता है।

'कमलेश्वर' नई कहानी के प्रणेताओं में से हैं इसलिए उनके कथ्य में शहरी जीवन में पहचान की समस्या तथा आंतरिक छटपटाहट का भाव सघन रूप से मिलता है। 'खोई हुई दिशाएँ' कहानी की यह पंक्तियाँ ऐसा ही भाव प्रस्तुत कर रही हैं।

लेखक कनॉट प्लेस पर अपने बच्चों को गोलगप्पे खिलाती माँओं की कृत्रिमता पर व्यंग्य कर रहा है। बच्चों की भावनाएँ तो सहज हैं परन्तु माताएँ शहरी वातावरण में ढलकर कृत्रिम हो गई हैं। इस व्यवहार को नकारा भी नहीं जा सकता क्योंकि यही आधुनिक शहरी जीवन का सत्य है और स्वीकार भी नहीं किया जा सकता क्योंकि यह व्यक्ति की मूल भावनाओं से संगत नहीं है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

1. नई कहानी में संप्रेषित 'आत्म-निर्वासन', आत्मपीड़न व कृत्रिमता यहाँ उभरकर आई है।
2. व्यंग्य और ओम एक साथ घुल गए हैं।
3. बच्चों की शक्लों के माध्यम से व्यक्ति के मूल मानवीय भावों की ओर इशारा किया गया है।
4. प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ङ) मगर कोठरी में बैठने की देर थी कि आँखों से छल-छल आँसू बहने लगे। वह दुपट्टे से बार-बार उन्हें पोंछती, पर वे बार-बार उमड़ आते, जैसे बरसों का बाँध तोड़कर उमड़ आये हों। माँ ने बहुतेरा दिल को समझाया, हाथ जोड़े, भगवान का नाम लिया, बेटे के चिरायु होने की प्रार्थना की, बार-बार आँखें बन्द की, मगर आँसू बरसात के पानी की तरह जैसे थमने में ही न आते थे।

प्रस्तुत गद्यखण्ड 'भीष्म साहनी' की कहानी 'चीफ की दावत' से लिया गया है। लेखक यहाँ अपने ही बेटे द्वारा तिरस्कृत माँ के हृदय व स्थितियों को संप्रेषित कर रहा है।

जैसे ही माँ उपहास का पात्र बनकर कोठरी में आती है उसकी भावनाएँ उमड़ पड़ती हैं। बार-बार वह खुद को समझाती है पर उपहास व तिरस्कार की सघनता आँसू नहीं थमने देती।

वह बेटे को दीर्घायु का आशीर्वाद देती है अर्थात् उसके भले की कामना भी करती है पर दर्द को संभाल नहीं पाती।

विशेष 1. लेखक आधुनिक दौर के संबंधों के 'उपयोगितावाद' व कृत्रिमीकरण को संप्रेषित कर रहा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this sp

2. यहाँ माँ के उस स्वभाव को भी दर्शाने का प्रयास किया गया है कि बेटा कितना भी निर्दयी हो जाए, माँ सदैव उसका भला ही सोचती है।

3. सहज शब्दों में गहन भावबोध साहनी जी की विशेषता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'मैला आँचल' का नायक आप किसे मानते हैं? तार्किक उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पारंपरिक रूप से चली आ रही हिन्दी उपन्यास में नायक की अवधारणा को भिन्न- भिन्न करने का श्रेय प्रेमचन्द को दिया जाता है जिन्होंने एक गरीब वर्ग के किसान 'होरी' को नायक बनाया तथा यथार्थ का नग्न चित्रण किया।

फणीश्वरनाथ रेणु एक कदम और आगे बढ़कर नायक की धारणा में यह स्वीकार करने को भी तैयार नहीं है कि नायक कोई मानवीय चरित्र ही होना चाहिए। हालांकि उनके उपन्यास 'मैला आँचल' में सीमित मात्रा में 'डा० प्रशान्त', 'कालीचरण' व बावनदास में नायकत्व के लक्षण दिखते हैं पर वे उपन्यास के अन्त तक आते- आते धूमिल हो जाते हैं।

कालीचरण का महत्व लगभग समाप्त हो जाता है, जबकि बावनदास एक त्रासदीपूर्ण मृत्यु को विवश हो जाता है और स्थितियों में परिवर्तन करने का उसका प्रयास पूर्ण रूप से विफल। डा० प्रशान्त हालांकि

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अन्त तक जिजीविषा व सकारात्मकता बनाए रखने में सक्षम होते हैं पर उनका महत्व भी उतना नहीं जितना कथानक में अँचल का है।

घोषित रूप से रेणु ने मैला आँचल को 'आँचलिक' उपन्यास के रूप में लिखा है और जिस प्रकार लेखक नायक के हर पक्ष को, हर पक्ष के प्रत्येक भेद को व्याख्यायित करने का प्रयास करता है, वैसा प्रयास उपन्यास में केवल मेरीगंज को लेकर दिखता है।

चाहे वह शुरुआती बाह्य भूगोल का वर्णन हो या फिर गाँव के आंतरिक भूगोल का चित्रण। रेणु मेरीगंज के प्रत्येक पहलू सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक को पूरी तन्मयता से वर्णित करते हैं और उसमें 'धाक-धिन्ना', भउजिया गीत व जाट-जटिन के प्रसंगों का छौंके लगाकर उसकी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशिष्टता को उजागर करते हैं।
वे अपनी वैचारिकता से तटस्थ होकर समस्त विद्रूपताओं को संपुषित करते हैं। और अन्ततः वह मेरीगंज ही है जिसने प्रत्येक चरित्र को प्रभावित किया कोई मानवीय चरित्र नहीं।

पाठक पर प्रभाव की दृष्टि से भी नायक की भूमिका अहम होती है। 'मैला आँचल' में यदि किसी एक चरित्र ने पाठक के हृदय में अपना स्थान व प्रभाव सर्वाधिक बनाया है तो वह मेरीगंज ही है।

समग्रतः आंचलिक उपन्यास की परंपरा से न्याय करते हुए यहाँ 'मेरीगंज' का नायकत्व ही सर्वश्रेष्ठ व सर्वमान्य है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।

(Please don't wri anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'दिव्या' उपन्यास के महत्त्व पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दिव्या उस समय (1945) का उपन्यास है जब भारत राजनीतिक रूप से तो आजादी की ओर कदम बढ़ा रहा था पर सामाजिक रूप से दमित वर्ग के लिए सामंती समाज से आजादी अभी भी दुर्गम स्वप्न के समान ही थी।

ऐसे समय में जब नारियाँ व दलित अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहे थे तब यशपाल ने दिव्या के माध्यम से जो दृष्टि प्रतिपादित की वह न सिर्फ आधुनिक थी बल्कि आत्मावलोचन की ओर अग्रसर करने वाली भी थी।

'दिव्या' में दिव्या अंततः समस्त सामाजिक व्यवस्थाओं की कृत्रिमताओं व विद्रूपताओं की पहचान करने में सक्षम होती है और समझ जाती है कि चाहे कुलमर्यादा का आदर हो या 'कुलवधू का सम्मान' यह सब नारी की परतंत्रता के मुहावरे ही है।

ऐसे समय में जब 'प्रसाद' व गुप्त ऐसी पारंपरिक नारी-दृष्टि प्रस्तावित कर रहे थे

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'दिव्या' परंपरा से विद्रोह का बिगुल फूंक नारी को सहज मानव के रूप में स्वीकार करने की घोषणा करती है, और स्त्री आंदोलन की भूमिका बांधती है।

'दिव्या' की दलित दृष्टि का महत्व भी अप्रतिम है। शोषण की संरचना के कारणों व व्यवस्थाओं की पड़ताल करते हुए यशपाल 'पृथुसेन' के माध्यम से दलितों की चेतना को जागृत करने का नहीं प्रयास कर रहे हैं जो उस समय डॉ॰ अम्बेडकर व 'पेरियार' जैसे विचारक कर रहे थे।

दिव्या का महत्व इसकी 'विश्लेषणवादी' इतिहास दृष्टि को लेकर भी है। यशपाल प्रतिपादित करते हैं कि "इतिहास मनुष्य का स्वयं की परंपरा में आत्म-विश्लेषण है।" जिन समस्याओं का समाधान हम वर्तमान में नहीं पाते इतिहास में उनके संकेत उपस्थित होते हैं।

यह दृष्टि 'सांस्कृतिक आदर्शवाद' की परंपरा से विचलन व आगे के साहित्य

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के लिए रास्ता तैयार करती है।

मानव के महत्व की स्थापना व कर्मफल तथा 'भाग्यवाद' का नकार कर दिया वास्तविक आजादी का स्वरूप स्थापित करता है।

~~इस~~ समग्रतः अपनी जीवन-दृष्टि के लिए दिनया का महत्व अप्रतिम है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'महाभोज' उपन्यास के महत्त्व पर विचार कीजिये। 15

महाभोज 70 के दशक में लिखा गया सशक्त राजनीतिक उपन्यास है जो समस्त राजनीतिक व सामाजिक विद्रूपताओं को नग्न रूप में देखने का साहस जुटाता है।

ऐसे समय में जब समस्त साहित्य धारा अपने 'आंतरिक विश्लेषणों' में ही व्यस्त थी, तब लेखिका समाज की उथल पुथल को उपन्यास का विषय बनाकर सहज यथार्थ का प्रतिपादन करना चाहती हैं और जन-चेतना को पुनः झकझोरती हैं।

उपन्यास में राजनीति में व्याप्त अवसरवादिता, छद्म प्रवृत्तियों व अपराधीकरण के प्रत्येक पहलू को खोला गया है। किस प्रकार किसी की मौत राजनेताओं के लिए अवसर होती है, किस प्रकार नौकरशाही व पत्रकारिता राजनीति के तलवे चाटती है और आम-जन से कटी हुई सिर्फ स्वार्थ-सिद्धि में लिप्त रहती है। ऐसे कथ्य का प्रतिपादन प्रेमचन्द के बाद पहली

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

बार महाभोज में ही मिलता है।

महाभोज का महत्व अपने समय की विद्रूपताओं को चित्रित करने तक ही सीमित नहीं है। यह उपन्यास समस्याओं का समाधान भी सुझाता है। उपन्यास में मि॰ सक्सेना के हृदय परिवर्तन के माध्यम से उस 'रक्तस्नात लपकती अग्निलीक' का भी चित्रण किया गया है जिसके बुझ जाने की चिंता 'मुक्तिबोध' के यहाँ दिखती है।

महाभोज समग्रतः उस परंपरा से विच्छेद है जो आत्मसीमित हो स्वार्थी हो गई थी और एक नये समाज का आह्वान भी इस रूप में हिन्दी उपन्यास में इसका महत्व सदैव बना रहेगा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।

(Please don't wr anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'दिव्या' उपन्यास के माध्यम से यशपाल ने हिंदी उपन्यास में उपस्थित नारी-संबंधी चिन्तन में गहन हस्तक्षेप किया है। इस कथन के संदर्भ में 'दिव्या' उपन्यास के कथ्य पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यशपाल का रचनाकाल ~~लगभग~~ लगभग वही है जो मैथिलीशरण गुप्त और प्रसाद ~~~~ के साथ-साथ जैनेन्द्र का भी माना जाता है; और इसी के सापेक्ष यशपाल की नारी-दृष्टि का मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

भारतीय साहित्य परंपरा में नारी-दृष्टि सदैव आदर्शवादी व संकुचित ही रही है। चाहे प्रसाद का उद्घोष हो कि "नारी तुम केवल श्रद्धा हो" या फिर गुप्त जी द्वारा प्रतिपादित नारी का ~~~~ 'सावित्री स्वरूप' जहाँ नारी को केवल त्याग, दया, क्षमा जैसे कोमल भावों का प्रतीक माना गया और जहाँ भी उसने 'विजया' बनकर सहज भावनाओं को अंगीकार किया वहीं उसे आत्म-हत्या करनी पड़ी। नारी का स्वरूप प्राण और सहचरी तक तो निराला ले गए किन्तु सामाजिक रूप से उसे सक्षम नहीं बना पाए

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't w anything in thi

दूसरी तरफ जैनेन्द्र ने नारी की सहज भावनाओं को उभारा तो । परन्तु चाहे वह 'मृणाल' हो या 'कट्टो', वे अपनी परिस्थितियों को बदल पाने में असमर्थ रहीं।

ऐसे में 'दिव्या' के चरित्र के माध्यम से यशपाल नारी-चिंतन में गहन हस्तक्षेप करते हैं।

'दिव्या', 'धारा' और 'अंशुमाला' के क्रम से दिव्या समस्त सामाजिक, धार्मिक व राजनीतिक ~~संरचना~~ संरचनाओं की पड़ताल करती है और पाती है कि चाहे वह "कुलमहादेवी का आदर हो या फिर कुलमाता का अधिकार" ~~सब~~ सिर्फ आर्य पुरुष का प्रश्रय मात्र है तथा नारी को बाँधकर रखने का षड्यंत्र है।

दिव्या धार्मिक संरचना पर भी आक्षेप करती है क्योंकि बौद्ध धर्म जैसे धर्म भी वर्ण-व्यवस्था आदि के मामले में अत्यन्त प्रगतिशील होते हुए भी

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नारी दृष्टि में अत्यन्त संकुचित व परंपरावादी ही सिद्ध होते हैं।

इस प्रकार दिव्या सब संरचनाओं के मूल स्वरूप को समझती हुई 'रुद्रधीर' के रूप में सामाजिक तथा 'पृथुसेन' के रूप में धार्मिक संरचना का नकार कर सहज मानवीय स्वरूप 'मारिश' का स्वीकार करती है और प्रतिपादित करती है कि नारी को आश्रय का आदान-प्रदान ही चाहिए कुछ और नहीं।

यशपाल का महत्व आधुनिक नारी-चिंतन के प्रतिपादन के लिए हिन्दी उपन्यास में सदैव बना रहेगा।

———— x ————

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्
कुछ न लिखें

(Please don't
anything in t

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'रेणु का कथा-शिल्प कहा आंचलिक जाता है जो एक माने में ठीक है, पर उपन्यास की दृष्टि में सम्पूर्ण जातीय जीवन एक साथ समोया हुआ है।' यदि ऐसा है तो क्या हम मान सकते हैं कि 'गोदान' के बाद की कथा 'मैला आँचल' कहता है? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रेणु ने घोषित रूप से 'मैला आँचल' से आँचलिक उपन्यास परम्परा का आगाज किया है। वे लिखते हैं कि "इसमें शूल भी हैं, धूल भी है फूल भी है, गुलाब भी है, कीचड़ भी है" इस प्रकार वे पश्चिम के लेखकों यथा फाकनर व मारिया एडवर्ड की परंपरा को स्वीकार कर उसी प्रकार का कथा-शिल्प प्रस्तुत करते हैं।

आँचलिकता के सम्पूर्ण संप्रेषण के लिए वे देशज भाषा के प्रयोग को प्राथमिकता देते हैं तथा भैंसचरमन, रायबरेली जैसे शब्दों का प्रयोग करते हैं। भौगोलिक ध्वनियों की सूक्ष्मता का ध्यान तो रखते ही हैं, सांस्कृतिक पक्ष के प्रत्येक अंग का लोक-चित्रण करते हैं चाहे वह जाट-जाटिन का खेल हो या भजिया के गीत।

अपनी विचारधारा से तटस्थता भी आँचलिकता की रक्षा करने का ही माध्यम है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

परन्तु रेणु ऐसे रचनाकार हैं जो किसी एक गाँव के वर्णन के उद्देश्य मात्र को लेकर रचनाकर्म नहीं कर सकते। उन्होंने आँचलिक ढाँचे में भी राष्ट्रीयता का त्याग नहीं किया।

वे घोषणा भी करते हैं कि उन्होंने 'मेरीगंज' को समस्त पिछड़े गाँवों का प्रतीक मानकर उपन्यास लिखा है अर्थात् मेरीगंज की कहानी भारत के प्रत्येक पिछड़े गाँव की ही कहानी है।

चाहे राष्ट्रीय आंदोलन का स्वरूप हो या सामाजिक शोषण का स्वरूप, चाहे जातीय संरचना हो या आर्थिक वंचन, मेरीगंज की समस्याएँ व संरचना ठीक वही है जो भारत के प्रत्येक गाँव में उपस्थित थी।

इस प्रकार रेणु भी 'गोदान' की राष्ट्रीय उपन्यास की परम्परा का अगला चरण ही है जहाँ राष्ट्रीयता स्थूल रूप से भले ही न दिखती हो, सूक्ष्म रूप

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में हर कण में विद्यमान है और राष्ट्रीय चेतना व आंचलिक चेतना का जैसा संतुलन रेणु ने साधा है वह अतुलनीय है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'महाभोज' उपन्यास के 'दा साहब' का चरित्र-चित्रण कीजिये। 15

'महाभोज' उपन्यास के 'दा साहब' हिन्दी उपन्यास के वर्गगत चरित्रों की परंपरा का एक सशक्त उदाहरण हैं।

दा साहब प्रदेश के मुख्यमंत्री हैं और राजनीति के महारथी। राजनीति में अपने प्रतिद्वंद्वियों को पस्त करना हो या अवसर को अपने पक्ष में करना हो, सब गुणों में उन्हें महारथ हासिल है।

वे राजनेताओं के उस 'घाघ' रूप के प्रतिनिधि हैं जिनकी कथनी और करनी में जमीन - आसमान का अन्तर होता है। जो बोलते तो बड़ी - बड़ी आदर्शवादी बातें हैं परन्तु मन में सिर्फ सत्ता का लक्ष्य ही रहता है और वास्तविक जीवन में आदर्श उनकी परिधि से कोसों दूर हैं।

" ~~अपनी~~ बात को अपने से काटकर भी किया जा सकता है' यह गुर कोई दा साहब से सीखे। वे ~~अपने~~ ~~एक~~ घाघ राजनेता की भाँति ही अपने चेलों को सत्ता

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दिखाकर स्वयंसेवा में जुटे हैं तथा अपने कार्य करवाने के लिए मीडिया और नौकरशाही को दबाने से भी नहीं चूकते और इसके लिए 'साम', 'दाम', 'दण्ड', भेद, सभी युक्तियों का प्रयोग करना वे जानते हैं।

वे कृत्रिम आँसू भी बहाते हैं और झूठी पुचकार भी दिखाते हैं।

इस प्रकार 'हा साहब' राजनीति का वह यथार्थ प्रेरित विद्रूप चरित्र है जो गाहे-बगाहे हमें देखने को मिल जाता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation